कावेरी

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु – 560001

अंक : 26

कावेरी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु – 560 001

कावेरी
हिंदी पत्रिका-2021
अंक : छब्बीस

प्रकाशनः

कावेरी हिंदी गृह पत्रिका

प्रकाशकः

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु – 560 001

अंकः

छब्बीसवां (26)

उद्देश्यः

राजभाषा का संवर्धन, संबंधित कठिनाइयों का निवारण एवं कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना।

मूल्यः

राजभाषा के प्रति निष्ठा

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के
व्यक्तिगत विचार हैं।
संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से
सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षकः

श्री आर.नरेश
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

संरक्षकः

डॉ. प्रियांका एल.नायक
उप महालेखाकार (प्रशासन)

यशोदा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी.)

शिवप्रिया.बी.
वरिष्ठ लेखाधिकारी (प्रशासन)

संपादकः

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं प्रभारी/ हिंदी कक्ष

सहयोग प्रतिनिधि

निशा कुमारी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

संदीप
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

एवं

सभी रचनाकार

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिम् कुरु ॥

भारतीयों में यह मान्यता है कि यदि पवित्र तीर्थस्थलों के दर्शन न कर सकें तो, दृढ़ विश्वास के साथ उन तीर्थस्थलों का स्मरण करते हुए स्नान किया जाए तो वही सुफल प्राप्त होता है जो उनके प्रत्यक्ष दर्शन करने से प्राप्त होता है। इन्हीं पवित्र तीर्थों का स्मरण है उपरोक्त स्तुति ।

- टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए।
- मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए।
- शब्दों में अटकिए नहीं।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- अभ्यास अविलम्ब आरंभ कीजिए।

हिंदी दिवस 2021
के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान ; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा- हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

--

संदेश

हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' का 26वां अंक आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे अंत्यत हर्ष की अनुभूति हो रही है। हिंदी हमारी राजभाषा है। अतः इसके प्रति समर्पित होना हमारा संवैधानिक दायित्व है। 'कावेरी' पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं विकास की गति को तेज करने में सदैव प्रयासरत है।

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी रचनात्मकता का परिचय इस पत्रिका के माध्यम से दिया है। मुझे पूरा विश्वास है कि हर बार की तरह इस बार का अंक भी आप सभी सुधी पाठकों को पसंद आएगा।

मैं 'कावेरी' पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ।

पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ,

जय हिंद, जय हिंदी।

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह)

अभिनंदन

स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है। यह कार्यालय राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध है।

हमारे कार्यालय से प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार के तहत एक उत्साहवर्धक वातावरण सृजित करने का प्रयास किया जाता है। यह एक ऐसा मंच है जिसके द्वारा कार्मिकों को अपनी रचनात्मक प्रतिभाएं उजागर करने का अवसर मिलता है। आशा है कि 'कावेरी' पत्रिका का यह 26वां अंक भी आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेगा।

'कावेरी' पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

धन्यवाद।

प्रियांका.

(डॉ. प्रियांका एल. नायक)
उप महालेखाकार (प्रशासन)

शुभकामना

हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 26वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं सभी को तहे दिल से बधाई देती हूँ। 'कावेरी' पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी पदाधिकारियों को अपनी भावनाओं, अनुभूतियों एवं कल्पना शक्ति को उजागर करने का अवसर मिलता है। प्रति वर्ष इस कार्यालय के पदाधिकारी अपनी रचनात्मक सृजनता का सराहनीय परिचय इस पत्रिका के माध्यम से देते आ रहे हैं। इस वर्ष भी उनके द्वारा व्यक्त विचार एवं रचनाएं सराहनीय है। उम्मीद है कि आप सभी पाठकों को हर बार की तरह इस बार भी 'कावेरी' का यह नूतन ई-अंक पसंद आएगा।

कोविड 19 जैसे महामारी के माहौल से गुजरने के बावजूद इस पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों, पत्रिका संपादन में कार्यरत संपादक मंडल एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

शिवप्रिया बी.

(शिवप्रिया बी.)
वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा.सं.वि.)

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

हर देश की अपनी भाषाएं होती हैं। भाषा के माध्यम से ही हम एक दूसरे की बातों और विचारों को समझ और समझा पाते हैं। एक प्रसिद्ध कहावत है- *'कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी'*। हमारे देश में भी भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपनी-अपनी भाषाएं हैं, बोलियाँ हैं। हिंदी भारत के एक बड़े भू-भाग की मातृभाषा है। जिन लोगों की मातृभाषा हिंदी नहीं है वे लोग भी इसे आसानी से समझ और बोल लेते हैं। इसी खूबी के कारण हिंदी को संघ की राजभाषा बनाया गया।

राजभाषा के रूप में हिंदी भारत की सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने में विश्वास रखती है। संविधान में भाग 17 के अनुच्छेद 351 के अनुसार 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे'।

प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस समस्त भारतवर्ष खासकर केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। सरकारी कर्मचारी होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है कि हम हिंदी सीखें और उसे दिन-प्रतिदिन के कार्यालयीन कार्यों में उपयोग करें।

'कावेरी' का 26वां अंक आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अंत्यत गौरव की अनुभूति हो रही है। यह 'कावेरी' का द्वितीय ई-अंक है। राजभाषा हिंदी की प्रचार-प्रसार करने का यह एक विनम्र प्रयास है। मुझे पूरी उम्मीद है कि हर बार की तरह इस अंक को भी आप सभी का स्नेह प्राप्त होगा।

प्रियंका बी. गोस्वामी

(डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी)
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं प्रभारी हिंदी कक्ष

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	कोरोना महामारी	शिवप्रिया बी.	16-17
2	नया सवेरा	उदय प्रताप सिंह	18
3	हिंदी जगत के महान साहित्यकार कमलेश्वर	डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी	19-24
4	हीररांझा	शिवांकु चर्तुर्वेदी	25
5	भारत का गर्व-नीरज चोपड़ा	संदीप	26-27
6	किस्सा-ए-जिन्दगी	शिवांकु चर्तुर्वेदी	28
7	बिछड़ते अपने	शिवांकु चर्तुर्वेदी	29
8	अपनी जिम्मेदारी	हिमांशु पटेल	30
9	मेरा देश मेरी माँ	हिमांशु पटेल	31
10	चुटकुले	एम.एस.सुकन्या	32-33
11	सफर	राहुल शर्मा	34
12	ओलम्पिक में महिलाओं का योगदान	निशा कुमारी	35-36
13	अनोखी प्रश्नावली	सविता	37
14	कोविड से उत्पन्न तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य	डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी	38-40
15	कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामान्य वाक्यांश	संकलन-हिंदी कक्ष	41-42
16	ग्लोबल वार्मिंग	सुधांशु द्विवेदी	43-44
17	मानव जीवन में खेल का महत्व	के.एन.जयश्री राज	45-46
18	आपकी प्रतिक्रियाएं		47-48
19	हिंदी प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम		49-50
20	हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम		51

कोरोना महामारी

शिवप्रिया बी.,
वरिष्ठ लेखाधिकारी

कोरोना वायरस आज दुनियाभर के लिए एक बहुत गंभीर समस्या बन गई है । यह संक्रमण अब तक 70 देशों में फैलने के बाद तकरीबन लाखों लोगों की जान ले चुका है । यह वायरस इंसान और जानवर दोनों में फैल सकता है । इस वायरस को अभी "SARS-COV-2" नाम दिया गया है और इसकी वजह से होने वाली बीमारी को "Corona Disease 2019" जिसका संक्षिप्त नाम "COVID-19" है । 30 जनवरी 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इस महामारी को सामाजिक स्वास्थ्य इमर्जंसी घोषित कर दिया जोकि एक अंतर्राष्ट्रीय चिंता का कारण है।

<u>कोरोना वायरस के लक्षणः-</u>

कोरोना वायरस से पीड़ित जनों के लक्षण, संक्रमण होने के दो से चौदह दिनों के भीतर दिखाई देते हैं । यह लक्षण अधिकतर सौम्य होते हैं तथा कुछ लोगों में तो संक्रमित होने के बावजूद कोई लक्षण दिखाई नहीं देता । बुखार, थकान, सूखी खांसी, नाक का बंद होना, बहती नाक, गले में खराश होना आदि इसके कुछ लक्षण हैं । अगर आप इस वायरस से संक्रमित हैं तो यह आपके संपर्क में आने वालों को भी संक्रमित कर सकता है । यह वायरस मरीज के खांसने या छींकने से बाहर आती बूंदों के गिरने या संक्रमित वस्तु के साथ संपर्क करके अपनी आंख, नाक या मुंह को छूने से शरीर में प्रवेश करता है । इस बीमारी से प्रभावित लोगों से 6 फीट की दूरी रखनी चाहिए ।

<u>प्रभावः-</u>

इस वायरस ने पूरे समाज को आर्थिक, सामाजिक एवं शारीरिक रूप से प्रभावित किया है । कोरोना के प्रभाव को रोकने के लिए 24 मार्च 2020 से देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की गई तथा इसे कई बार आगे भी बढ़ाया गया जिससे संपूर्ण भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व का आर्थिक नुकसान हुआ ।

पहली लहर की तुलना में दूसरी लहर अधिक क्षतिकारक साबित हुई। चारों ओर लोग ऑक्सीजन व अस्पताल के बेड के लिए तड़पने लगे । लाखों परिवारों के प्रियजन इस बीमारी की भेंट चढ़ गये । लोग एक-दूसरे के समीप जाने से भी कतराने लगे । बीमारी से ग्रसित लोग शारीरिक तौर पर कमजोर हो गये तथा बाकी लोगों को भी इस बीमारी का भय सताने लगा । चारों तरफ मरीजों की गूंज सुनाई देने लगी । औद्योगिक संस्थानों के बंद होने के कारण लोग बेरोजगार हो गये । परिवहन के साधनों के बंद होने के कारण लोगों को आवाजाही में बहुत तकलीफ झेलनी पड़ी । महंगाई बढ़ गई

जिससे समाज के निचले वर्ग की कमर टूट गई । दूसरी लहर के बाद अब तीसरी लहर की भी आशंका जताई जा रही है ।

उपायः-

सरकार ने इस संक्रमण में राहत देते हुए, राहत पैकेज की घोषणा की । गरीबों के लिए मुफ्त आटा,गेंहू, चावल, दाल, तेल का प्रबंध किया । फिर भी संपूर्ण समाज को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा । सरकार ने लोगों को मास्क लगाने एवं दो गज की सामाजिक दूरी रखने के लिए दिशानिर्देश जारी किए । लगातार हाथ धोने व सेनेटाईजर का प्रयोग करने का आह्वान किया । हमारे वैज्ञानिकों ने दिन-रात मेहनत करके वैक्सीन तैयार की जिनमें कोविशील्ड, कोवैक्सीन आदि प्रमुख हैं तथा भारत सरकार ने कुछ विदेशी वैक्सीनों को बाजार में उतरने की भी अनुमति प्रदान की है । हालांकि कोरोना का प्रभाव धीरे-धीरे कम होता जा रहा है तथापि हमें सरकार द्वारा जारी कोविड संबंधी दिशा-निर्देशों का पालन करते रहना बहुत जरूरी है ताकि हम स्वयं एवं अपने परिवार के साथ समाज को फिर से होने वाली क्षति से बचा सके ।

*****

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी...

नया सवेरा

उदय प्रताप सिंह, हिंदी अधिकारी
प्रतिनियुक्ति पर- कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, नई दिल्ली

चंद निराशा के बादल,
शेष बचे हैं जीवन में,
जल्दी ही छट जाएंगे,
कहता है कोई अंतर्मन में।

बस थोड़ा सा धैर्य धरो,
अँधियारा छट जाएगा।
जीवन फिर से चहक उठेगा,
नया सवेरा आएगा।

अपने मिलेंगें अपनों से,
फिर से हँसी ठिठोली होगी।
इक-दूजे से गले मिलेंगे,
घर बाहर रंगोली होगी।

बचपन बाहर निकलेगा,
किलकारी फिर गूंजेगी।
धमाचौकड़ी होगी घर-घर,
शैतानी फिर सूझेगी।

शौक-शौक में सारे बच्चें,
विद्यालय फिर जाएंगे।
नन्हें-मुन्हें मित्रों की,
कई शिकायत लाएंगे।

*****

हिंदी जगत के महान साहित्यकार कमलेश्वर

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

व्यक्तित्वः

<u>जन्म एवं परिवार-</u> हिंदी साहित्य जगत के प्रख्यात साहित्यकार कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना उर्फ कमलेश्वर का जन्म 6 जनवरी, 1931 को उत्तरप्रदेश के मैनपुरी कस्बे के कटरा मुहल्ले में हुआ था। उनके पिता का नाम जगदंबाप्रसाद सक्सेना और माँ का नाम शांति देवी था। वे जमींदार परिवार के थे। उनके बचपन का नाम कैलाश था। लेकिन वे बाद में कमलेश्वर के नाम से ही विख्यात हुए। कमलेश्वर के परिवार में कुल सात भाई थे जिनमें वे सबसे छोटे थे। सबसे बड़े भाई सौतेले थे बाकी पाँच भाईयों की मृत्यु हो गई थीं। कमलेश्वर जब तीन चार वर्ष के थे, तभी उनके पिता की मृत्यु ह्रदय गति रुक जाने के कारण हो गई । पिता का अभाव उनको पूरा जीवन खलता रहा। उन्हें अपने जीवन में दूसरा सबसे बड़ा आघात तब लगा जब उन्होंने अपने बड़े भाई को असमय ही खो दिया। भाई को खोने के बाद पूरे परिवार की जिम्मेदारी किशोर कमलेश्वर पर ही आ गई। कमलेश्वर का बचपन काफी कठिनाईयों के बीच गुजरा। उनका परिवार टूटा बिखरा सामंतवादी तथा मध्यवर्गीय था। छोटे उम्र में ही पूरे परिवार की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई। इस संबंध में कमलेश्वर का कहना है- *'एक अमीर कहे जाने वाले घर में गरीब की तरह रहना...... खाना खाकर भी भूख उठना,अकुलाहट भरी दुखों के बीच भी हँस सकना,बच्चा होते हुए भी वयस्कों की तरह निर्णय ले सकना,यह मेरी आदत नहीं मजबूरी थी'*।

कमलेश्वर की शादी सन् 1958 ई. में गायत्री से हुई। कमलेश्वर की पहली पुत्री का निधन जन्म से कुछ समय बाद ही हो गया था। इससे उन्हें गहरा मानसिक धक्का लगा। उनकी दूसरी पुत्री का नाम मानू है। कमलेश्वर की पत्नी गायत्री भी लेखिका है।

<u>शिक्षा-</u> कमलेश्वर का बचपन मैनपुरी में गुजरा तो किशोरावस्था के प्रारंभिक वर्ष मैनपुरी में तो बाद में इलाहाबाद में गुजरा। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गवर्नमेंट हाईस्कूल, मैनपुरी ,1946 में किया। फिर 1950 में इलाहाबाद के के.पी.इंटर कालेज से इंटरमीडिएट की उपाधि ग्रहण की। उन्हें भौतिकी,गणित,अर्थशास्त्र,रसायनशास्त्र,भूगोल,हिंदी आदि विषयों का गहरा ज्ञान है। उनके एक परम मित्र एवं बीए के सहपाठी श्री दुष्यंतकुमार जी कमलेश्वर के बारे में कहते हैं- *'उसमें शुरू से ही साधारण से कहीं अधिक प्रतिभा,सूझ बूझ एवं सुरूचि थी'*। कमलेश्वर पहले विज्ञान के छात्र थे लेकिन उसमें उनका विशेष मन न लगने के कारण इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन 1952 में एमए हिंदी में दाखिला ले लिया और सदा के लिए हिंदी में अपना स्थाई पहचान बना लिया।

<u>कर्मक्षेत्र</u>- कमलेश्वर के कंधों पर किशोरावस्था से ही परिवार की जिम्मेदारी आ गई, जिसके कारण उन्हें कोमल अवस्था में ही आर्थिक जुगाड़ के लिए इधर-उधर कई जगहों पर कर्मरत रहना पड़ा। उन्होंने सन 1954 में संपादक श्रीपतराय के संपादकत्व में चल रही 'कहानी' मासिक पत्रिका में 100 रूपये माहवार की नौकरी की एवं इलाहाबाद में राजकमल प्रकाशन में साहित्य संपादक का काम भी किया। सन 1957 में इलाहाबाद के ऑल इंडिया रेडियो में स्क्रिप्ट राईटर के तौर पर नियुक्ति मिली। सन 1957 से 59 के बीच उनका दिल्ली दूरदर्शन में स्क्रिप्ट राईटर के रूप में तबादला हुआ। फिर वे दिल्ली दूरदर्शन से इस्तीफा देकर दिल्ली में ही स्वतंत्र लेखन में व्यस्त हो गए। उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया। उन्होंने सन 1980-82 के बीच दूरदर्शन भारत सरकार द्वारा संयुक्त महानिदेशक, दिल्ली का पदभार संभाला। बंबई में ही 1982 से 1986 तक सिनेलेखन का कार्य किया। फिर सन 1986-87 से स्वतंत्र कहानी लेखन जारी किया। फिर वे 1991 से पुनः कहानी लेखन,फिल्म संवाद लेखन,टीवी सीरियल लेखन में व्यस्त हो गए।

कृतित्वः

कमलेश्वर ने हिंदी साहित्य में पद्य को छोड़कर गद्य की लगभग सभी विधाओं को समृद्ध किया है। उपन्यास, कहानी, नाट्य रूपांतर से लेकर संस्मरण, समीक्षा, लेख, स्क्रिप्ट लेखन, संवाद लेखन आदि लगभग सभी विधाओं में उन्होंने हाथ आजमाया है। नीचे कमलेश्वर के इन अनेक विधाओं में योगदान के बारे में विस्तार से विवरण किया गया है-

कहानीकार के रूप में कमलेश्वर - कमलेश्वर हिंदी साहित्य के कहानी विधा में प्रेमचंद के रूप में अवतरित हुए हैं। कहानीकार कमलेश्वर का लेखन 1951 से प्रारंभ होता है। प्रारंभ में उन्होंने छिटपुट लेखन कार्य किया। उनकी सर्वप्रथम कहानी है *'कामरेड'*। परंतु *'सींखचे'* कहानी पहली छपी थी। उनका पहला कहानी संग्रह *'राजा निरबंसिया'* सन 1957 में प्रकाशित हुआ। उनकी कुल नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने लगभग 100 कहानियाँ लिखी हैं।

कमलेश्वर के कहानी संग्रह इस प्रकार हैं- राजा निरबंसिया (1956), कस्बे का आदमी (1958), जॉर्ज पंचम की नाम, मांस का दरिया (1963-64), खोई हुई दिशाएँ (1963), बयान (1972), जिंदा मुर्दे (1969), मेरी प्रिय कहानियाँ (1972), श्रेष्ठ कहानियाँ, कथा प्रस्थान (प्रारंभिक वर्षों की श्रेष्ठ कहानियाँ), कोहरा (1994), कमलेश्वर की समग्र कहानियाँ (2001)।

कमलेश्वर की पूरी कहानी लेखन-यात्रा को तीन भागों में बाँटा जा सकता हैं। स्वंय कमलेश्वर जी का कथन है- *'अपने कथा स्रोतों की पहचान और अपने परिवेश में जीने का प्रयत्न यह (मेरे) कहानी लेखन का पहला दौर था अर्थात यहाँ अनुभव के क्षेत्र की प्रामाणिक पहचान का प्रयत्न है'*।

कमलेश्वर की कथा-यात्रा को कुछ इस रूप में बाँटा जा सकता है-

पहला दौर - परंपरा से विद्रोह और अनुभव क्षेत्र की प्रामाणिक पहचान (सन 1959 से 1959 ई. तक)

दूसरा दौर - समय संगत यर्थाथ का स्वीकार- दारूण विसंगत संदर्भों की समझ (सन 1959-60 से 1966 ई. तक)

तीसरा दौर - सामान्य आदमी की नियति से जुड़ा मनुष्य के साथ समानांतर कालों का उपक्रम (सन 1966 से अद्यतन) (कमलेश्वर कहानी का संदर्भः पुष्पपाल सिंह,पृष्ठ 22-23)

उपन्यासकार के रूप में कमलेश्वर - कमलेश्वर का नाम हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों में शामिल किया जाता है। उन्होंने ग्यारह उपन्यासों की रचना की है। 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' (बदनाम गली) कमलेश्वर का सर्वप्रथम उपन्यास (लघु उपन्यास) है। यह उपन्यास सन 1958-59 में लिखा गया था। बाद में प्रकाशक की गलती के कारण 1968 'बदनाम गली' शीर्षक के नाम से भी प्रकाशित हुआ था। इसके पश्चात 'डाक बंगला' (सन 1961), 'लौटे हुए मुसाफिर' (सन 1963 ई.), 'तीसरा आदमी' (सन. 1964 ई.), 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' (सन. 1965 ई.) लिखे गए। इन उपन्यासों की रचना कमलेश्वर ने दिल्ली में रहते हुए की है। ये उनके दूसरे दौर के उपन्यास है। इसके पश्चात उन्होंने 'काली आँधी' लिखा जो धारावाहिक के रूप में साप्ताहिक 'हिंदुस्तान पत्रिका' में दिसम्बर सन 1974 ई. में प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात उन्होंने सन 1976 ई. में 'आगामी अतीत' लिखा जो 'धर्मयुग' में छपा। इसके बाद 'वही बात' सन 1980 ई. में प्रकाशित हुआ और 'सुबह- दोपहर- शाम' सन 1985 ई. में प्रकाशित हुआ। सन 2000 में उनकी 'कितने पाकिस्तान' नामक उपन्यास प्रकाशित हुई जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। यह उपन्यास कमलेश्वर द्वारा लगभग दस वर्ष में पूरी की गई। 'नया पत्रिका' के मार्च 1971 अंक में कमलेश्वर की कहानी 'कितने पाकिस्तान' (सर्वप्रथम) प्रकाशित हुई थी। बाद में 'कितने पाकिस्तान' शीर्षक से उनका उपन्यास प्रकाशित हुआ जो उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है।

संपादक के रूप में कमलेश्वर - कमलेश्वर ने भले ही छात्र-जीवन में ही 'विहान' (1954 ई.) पत्रिका निकाली थी, लेकिन सही मायने में उनके संपादक रूप में पहचान उनका 1954 ई. में श्रीपतराय की प्रसिद्ध पत्रिका 'कहानी' के संपादकीय सहयोगी के रूप में प्रारंभ हुई थी। उनकी संपादकीय- यात्रा में मोड़

तब आया जब उन्होंने 'नयी कहानियाँ' पत्रिका का संपादन-भार ग्रहण किया। 'राजकमल प्रकाशन' की इस प्रसिद्ध पत्रिका का संपादकत्व भार उन्होंने 1963ई. से 1966 ई. तक संभाला। 1961-63 ई. तक कमलेश्वर ने 'इंगित' साप्ताहिक (दिल्ली) का संपादन भी किया।

सन 1966ई. में उन्होंने मुंबई जाकर 'सारिका' का संपादन ग्रहण किया और उसे प्रसिद्धि की शिखर तक पहुँचा दिया। सर्वप्रथम हिंदी कहानी को जीवंत संवाद अन्य भारतीय भाषाओं की कहानियों के साथ इसी पत्रिका द्वारा संभव हुआ। हिंदी कहानी ने नए नए आयाम इसी पत्रिका के माध्यम से छुए हैं। बाद में 'सारिका' के माध्यम से उन्होंने अपना कहानी आंदोलन 'समांतन' स्थापित किया। एक तरह
से कमलेश्वर ने 'सारिका' को 'समांतर' का मुखपत्र ही बना दिया। कमलेश्वर ने 'सारिका' का संपादन 1978 तक किया। सन 1984 से 1988 तक उन्होंने दिल्ली से प्रकाशित कहानी-पत्रिका 'गंगा' का संपादन किया। इसके अलावा उन्होंने 'श्री वर्षा' (साप्ताहिक, मुंबई 1979-80) तथा 'कथा-यात्रा' (मुंबई,1978-1979) जैसी पत्रिकाओं को भी निकालने और उनके संपादन का कार्य भी किया।

इन सब के अतिरिक्त कमलेश्वर ने दैनिक पत्रों का संपादन भी किया। सन 1990-92 तक 'दैनिक जागरण' के दिल्ली संस्करण का संपादन किया तथा 1997 से 2002 ई. तक वे 'दैनिक भास्कर' के राजस्थान संस्करणों के प्रधान संपादक के रूप में कार्यरत रहें।

आलोचक के रूप में कमलेश्वर - कमलेश्वर ने खुद को एक सफल आलोचक के रूप में भी साबित किया है। उन्होंने अनेक आलोचनात्मक पुस्तकों की रचनाएँ की हैं। दिल्ली आने पर 1959-60 में कमलेश्वर ने 'नयी कहानी की भूमिका' का आलोचनात्मक ग्रंथ लिखा। इसमें उन्होंने कहानी के स्वरूप का विश्लेषण एवं निरूपण किया है। इसके चार वर्ष बाद उन्होंने 'धर्मयुग' पत्रिका में अपनी बहुचर्चित लेखमाला 'ऐयाश प्रेतों का विद्रोह' नामक आलोचनात्मक लेखों के रूप में प्रकाशित करायी। 'सारिका' पत्रिका के संपादकत्व में इन्होंनें इस पत्रिका में अनेकानेक आलोचनात्मक निबंध समयानुसार लिखे हैं। इस पत्रिका का 'मेरा पन्ना' शीर्षक संपादकीय लेख बहुत ही लोकप्रिय हुआ। इन्होंने 'मेरा पन्ना', 'समानांतर सोच' नामक शीर्षक में नयी कहानी के संदर्भ में महत्वपूर्ण आलोचनाएँ लिखी हैं।

नाटककार के रूप में कमलेश्वर - नाटककार के रूप में कमलेश्वर को ज्यादा सफलता नहीं मिल पायी। लेकिन फिर भी उन्होंने इस विधा को छुआ अवश्य था। कमलेश्वर ने 'अधूरी आवाज' एवं बाल नाटक 'खड़िया का घेरा' और 'चारूलता' लिखे हैं। 'चारूलता' नवीन ठाकुर के 'नष्टनीड़' का रूपांतरण है। उन्होंने मोहन राकेश का अधूरा नाटक 'पैर तले की जमीन' भी सफलता पूर्वक पूरा किया है।

'गोदान','गबन', 'निर्मला' के नाट्य रूपांतरण तथा 'दर्पण' संग्रह में विभिन्न भारतीय भाषाओं की कहानियों के नाट्य रूपांतरण उनके नाटकों में आते हैं। इन्होंने बाल नाटकों के चार संग्रह लिखे हैं जिनमें से कुछ प्राप्य एवं कुछ अप्राप्य हैं। कमलेश्वर ने 'रेगिस्तान' नामक नाटक की रचना भी की है, परंतु यह नाटक अभी तक अप्रकाशित ही है।

यात्रा-संस्मरण लेखक के रूप में कमलेश्वर - कमलेश्वर के यात्रा संस्मरण तीन संग्रहों में प्रकाशित हुए हैं- 'खण्डित यात्राएँ', 'बंगलादेश की यात्राएँ', 'चुनावों के मैदान' (प्रकाश्य) हैं।
'खंडित यात्राएँ' कमलेश्वर का यात्रा संस्मरण है जो 1975 में प्रकाशित हुआ। इसमें कश्मीर की वादी के सुरम्य, रौद्र या मादक रूप का चित्रण ही नहीं बल्कि वहाँ के जर्जर आदमी का भी चित्रण है। 'देश देशांतर' एवं 'कश्मीरः रात के बाद' भी यात्रा वृत्तांत विषयक रचनाएँ हैं।

'आत्मकथा-कमलेश्वर' तीन खंडों में प्रकाशित हुई है। 'जो मैंने जिया' (खंड-1)-बड़ी स्पष्टवादिता से लिखित संस्मरण है जिसमें लेखक ने न खुद को बख्शा है, न दूसरों कों। 'यादों के चिराग' (खंड 2)-हलचलों, दोस्ती-दुश्मनी,आधी शताब्दी के अनेक छोटे बड़े साहित्यिक गतिविधियों की दुनिया है। 'जलती हुई नदी' (खंड 3)- इसमें साहित्य के अतिरिक्त फिल्मी दुनिया के भी रोचक संस्मरण है। कमलेश्वर अपने अनुभवों को ही जीवन की आधारशिलाएँ मानते हैं। ये संस्मरण 'संडे मेल' नामक साप्ताहिक पत्रिका में जनवरी 1990 से दिसंबर 1990 तक 50 अंकों में प्रकाशित हुए थें। 'यादों के चिराग' नामक आधारशिला के दूसरे भाग को साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है।

निबंधकार कमलेश्वर - कमलेश्वर ने दिल्ली में रहने के समय सन 1996 में राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली से 200 निबंधों का संग्रह प्रस्तुत किया। संग्रह का समर्पण अनाम सहयोगियों के नाम है जिन्होंने इनके लेखन में हाथ बँटाया है। उनके निबंध विविध विषयों में हैं- हिंदी के निर्माता साहित्यकार, साहित्यिक प्रसंग, संस्कृति और कला,राष्ट्रीय समस्याएँ, आर्थिक,राजनैतिक शिक्षा, विज्ञान और खेलकूद आदि के अलावा मुहावरे, टिप्पणी आदि का भी समावेश है।

कमलेश्वर की दूरदर्शन और रेडियों संबंधी गतिविधियाँ-

कमलेश्वर ने 1957-58 में इलाहाबाद रेडियो स्टेशन पर कार्य किया। उन्होंने करीब 700 स्क्रिप्ट लेखन का कार्य किया। दूरदर्शन में कमलेश्वर 1959 में प्रथम स्क्रिप्ट राइटर के रूप में नियुक्त हुए। किंतु 1961 में जब 'जॉर्ज पंचम की नाक' कहानी को सरकार विरोधी बताते हुए लिखित खुलासा मांगा गया तो उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी। सन 1980 में वे पुनः

दूरदर्शन में आये। उन्होंने 'परिक्रमा' कार्यक्रम को संचालित किया जिसे यूनेस्को द्वारा दुनिया के 10 टॉप सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रमों में रेखांकित किया जाता है। इस कार्यक्रम में उन्होंने प्रमुखों से लेकर आम आदमी तक के लगभग तीन-चार सौ इंटरव्यू लिए थे। बंबई पत्रिका 'अबोनेयर' ने कमलेश्वर को सन 1975 के सर्वश्रेष्ठ टी.वी. व्यक्तित्व के रूप में चुना था। सन 1980 से तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने उन्हें अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर नियुक्ति दी। उन्होंने दूरदर्शन के लिए लगभग ढाई सौ स्क्रिप्टों का लेखन किया था। टी.वी. दिल्ली के लिए समाचार तथा अन्य कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण भी किया। साहित्यिक कार्यक्रम पत्रिका 'दर्पण' की शुरूआत की। लोकमंच तथा दूरदर्शन क्लब जैसे रोचक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। भारतीय दूरदर्शन के लिए पहली फिल्म 'पंद्रह अगस्त' के निर्माण का सौभाग्य भी उन्हें प्राप्त हुआ। भिवण्डी (बंबई) में हुए हिंदु-मुस्लिम दंगों पर भारतीय दूरदर्शन के लिए फिल्म का निर्माण भी उन्होंने किया। कमलेश्वर ने जब दूरदर्शन छोड़ा तो चण्डीगढ़ से प्रकाशित पंजाब के अग्रणी अंग्रेजी दैनिक 'ट्रिब्यून' के यशस्वी संपादक प्रेम भाटिया ने कहा- *'कमलेश्वर को दूरदर्शन की आवश्यकता नहीं थी, दूरदर्शन को कमलेश्वर की आवश्यकता थी'*।

कमलेश्वर की फिल्मी गतिविधियाँ - कमलेश्वर ने फिल्मलेखन में भी बड़ी सफलता हासिल की। उन्होंने 100 फिल्मों में कहीं पटकथा लेखन, कहीं संवाद लेखन तो कहीं कहानीकार के रूप में योगदान दिया हैं। उनके कुछ प्रमुख फिल्मों जिनकी वे पटकथाएँ लिखी हैं वे इस प्रकार हैं- 'आँधी', 'अमानुष', 'सारा आकाश', 'फिर भी', 'उसके बाद', 'पति पत्नि और वह', 'सौतन की बेटी', 'दि बर्निंग ट्रेन', 'सौतन', 'राम बलराम', 'मौसम', 'छोटी-सी बात', 'मि. नटवरलाल' एवं 'रजनीगंधा' इत्यादि।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि कमलेश्वर हिंदी साहित्य जगत के ऐसे धरोहर हैं जो अपनी लेखन शैली से विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से आम आदमी के स्वर ,उनके संघर्ष व पीड़ा को जीवंत रूप देने की शक्ति रखते थे। उनका निधन हिंदी साहित्य जगत के एक स्वर्णीम अध्याय का अंत माना जा सकता है।

*****

हीररांझा

शिवांकु चर्तुर्वेदी
एम.टी.एस

होना होता है...ख्वाबों की तामील में शामिल
महज़ ख़्वाब दिखाने से कोई अरमान पूरा नहीं होता।

चलना होता है साए सा करीब
महज़ मंजिल दिखा देने से रास्तों का सफर पूरा नहीं होता।

मिलाना होता है दिलों की धड़कनों को
महज़ दिल से लगाने से, कोई दिल अपना नहीं होता।

समझना होता है इश्क के रिवाज़ों को
महज़ हर रोज मोहब्बत का इजहार करने से कोई प्यार पूरा नहीं होता।

रुकना होता है अपनी रूह की ख़ातिर
महज़ अकेले चल निकलने से दो जिन्दगियों का हिस्सा पार नहीं होता।

ज़िक्र हर दफ़ा पूछना होता है
महज़ दो बातों से हर एक किस्सा पूरा नहीं होता।

हर शिकस्त पे सहारा होना होता है
महज़ दलीलों से कोई किसी का किनारा नहीं होता।

हजार दफ़ा टूटना होता हैं
महज़ चार पन्नों मे मोहब्बत का गुजारा नहीं होता।

आशिक बनना पड़ता हैं, निभाने खातिर
महज़ हाथ थाम लेने से हर कोई हीर रांझा नहीं होता।

हर कोई हीर रांझा नहीं होता...

*****

भारत का गर्व-नीरज चोपड़ा

संदीप,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

7 अगस्त 2021 के दिन सारा भारत खुशी से झूम उठा था और उसका कारण था भारत का ओलिंपिक में गोल्ड मेडल जीतना । खुशी से झूमने का मौका दिया श्री नीरज चोपड़ा ने । नीरज चोपड़ा हरियाणा के पानीपत जिले के एक छोटे से गांव खंडरा से संबंध रखते है । उनके पिता श्री सतीश कुमार एक साधारण किसान है, मां सरोज देवी एक गृहिणी है तथा दो बहनें है । दूध-घी काफी मात्रा में खाने-पीने के कारण किशोरावस्था में वे काफी गोलमटोल हो गये थे । वजन कम करने के लिए नीरज का पानीपत स्टेडियम के दौरे के दौरान भाला से परिचय हुआ । उनके चाचा ने इन्हें खेलों में भेजने का फैसला किया । 2014 में नीरज ने अपना पहला भाला सात हजार रूपये में खरीदा तथा बाद में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर , उन्होनें राष्ट्रीय शिविर में एक लाख रूपये का भाला खरीदा । 2016 में पोलैंड में विश्व जूनियर चैंपीयनशिप जीतने के लिए भाले (जैवलिन) को 86.48 मीटर की दूरी तक फेंका। मई 2016 में बतौर नायब सूबेदार भारतीय सेना में शामिल हुए । वे इस पद पर भारतीय सेना में सीधे शामिल होने वाले पहले खिलाड़ी है ।

वर्ष 2017 में भुवनेश्वर में 85.23 मीटर भाला फेंक कर एशियाई चैंपीयनशिप जीती लेकिन 2017 में ही संक्षिप्त अवधि के लिए उन्होनें अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ को बेहतर बनाने और दुनिया के शीर्ष दस भाला फेंकने वालों में शामिल होने के लिए संघर्ष किया ।

महान उवे हॉन के तहत प्रशिक्षण के बाद, नीरज मजबूत होकर वापस आए । उन्होनें राष्ट्रमंडल खेल 2018 में 86.47 मीटर के थ्रो के साथ गोल्ड मेडल जीता तथा 2018 एशियाई खेलों में 88.06 मीटर भाला फेंक कर गोल्ड मेडल जीता ।

वर्ष 2018 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से नवाजा गया तथा राजीव गांधी खेल पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया गया ।

अगर भारत में हर खेल प्रेमी एक सपना देखता है तो वह है एथलेटिक्स में ओलिंपिक पदक । मिल्खा सिंह और पी.टी.उषा के दिल टूटने का दर्द लंबे समय से दिलों में बसा हुआ था । ओलिंपिक खेल में केवल एक पदक ही इस दर्द को ठीक कर सकता था और वह दिन भी आने वाला था । 1900 में ओलंपिक प्रतियोगिता शुरू होने से लेकर 2020 तक भारत ने कुल 28 मेडल जीते थे । कोरोना महामारी के कारण वर्ष 2020 में जापान के टोक्यो शहर में होने वाले ओलिंपिक खेलों को जुलाई 2021 तक स्थगित किया गया । इन खेलों में भाग लेने हेतु भारत ने 127 खिलाड़ियों का अपना मजबूत दल भेजा था ।

मीराबाई चानू ने प्रतियोगिता की शुरूआत में ही भारत की झोली में रजत पदक डाल दिया था । इस प्रकार भारत ने 6 अगस्त तक दो रजत पदक, चार कांस्य पदकों सहित छः पदक जीत लिये थे । आखिरकार वह दिन भी आ गया जिसका इंतजार प्रत्येक भारतीय वर्षों से कर रहा था । 7 अगस्त को सारा भारत गोल्ड मेडल की उम्मीद में टेलीविजन पर नजर जमाये हुआ था । नीरज चोपड़ा ने सभी भारतीयों की उम्मीदों पर खरा उतरते हुए 87.58 की दूरी पर भाला फेंककर गोल्ड मेडल जीत लिया । इसी के साथ सारा भारत खुशी से झूम उठा । हरियाणा की पावन भूमि पर एक छोटे से गांव के एक साधारण परिवार में जन्म लेकर नीरज चोप़ड़ा ने जो कारनामा कर दिखाया वह भारतीय खेल इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गया ।

(जानकारी गूगल से संग्रहित)

*****

किस्सा-ए-जिन्दगी

शिवांकु चर्तुर्वेदी,
एम.टी.एस.

संभलने के लिए उठता क्यूँ मैं
जब गिरना तय है

अजनबी सी तलाश के लिए निकलता क्यूँ मैं
जब खोना तय है

क्यों रंगत सा वादा किया तूने जिंदगी
जब तोड़ना तय है

पल तो पल की खुशियाँ तू क्यूँ ऐसे सजाती
हमें पता है, रोना तय है

तुझपे भरोसा अब कुछ कम होता है
तेरा हर दफा बदलना तय है

तु सच्चा झूठ है..... या झूठा सच
तू सच्चा झूठ.....या झूठा सच
इसे समझना तय है

तू क्यों जोड़ती है, कतरे........ यादों के तमाम
सबका बिखरना तय है

बड़ी कोशिशों से तुझे दिल से लगाता हूँ
डर फिर भी एक रहता, तेरी ठोकरे खाना तय है

तुझे मौका दूँ तो तेरे किस लिबास पर
तेरा मुकरना तय है

चलने दे मुझे अब अकेले ही तन्हा
तेरी साजिश पता है
सबका बिछड़ना तय है

*****

बिछड़ते अपने

शिवांकु चर्तुर्वेदी,
एम.टी.एस.

गया जब कोई अपना छोड़कर,दर्द गज़ब का हुआ
हर शख्स कह रहा, क्या होगा रोकर.. कोई वापस ना आएगा
लेकिन जाने ना कोई, कैसे वो बिछड़ा शख्स ज़ेह्न से जाएगा।

हज़ारो यादें उसकी, करवटें लेती... जैसे पूरे का पूरा मुझमें बसा है
कितना याद आया है, जाने वाला
भींगा दामन सब कहता है।

अभी भी...
अभी भी.. दिल जिद पे अड़ा है
आंखों में सैलाब लिए खड़ा है
कैसे रहेगा ये सब भूलकर
कैसे जिएगा अपना ही हिस्सा छोड़कर।

हाँ..
हाँ.. देखा है मैंने अपनों का बिछड़ना
नामुमकिन सा होता है, यादों से मुकरना
रब करे अब किसी के अपने ना छूटे,
बड़ा मुश्किल होता है.. फिर से जिन्दगी का सँवरना।।

*****

अपनी जिम्मेदारी

हिमांशु पटेल,
डी.ई.ओ.

एक बार एक राजा के राज्य में महामारी फैल गयी। चारों ओर लोग मरने लगे। राजा ने इसे रोकने हेतु बहुत सारे उपाय किये परन्तु कुछ लाभ न हुआ। एक रात राजा को स्वप्न में भगवान ने कहा कि हे राजा तुम्हारी राजधानी के बीचों-बीच जो सूखा कुँआ है अगर अमावस्या की रात में राज्य का प्रत्येक निवासी अपने घर से एक-एक बाल्टी दूध उस कुंए में डालेगा तो अगली ही सुबह महामारी खत्म हो जायेगी। राजा ने अगली सुबह राज्य में प्रत्येक घर से एक-एक बाल्टी दूध अमावस्या की रात में उस कुएं में डलवाने की घोषणा कर दी।

अमावस्या की रात में जब कुएं में लोगों को दूध डालना था, उसी रात राज्य में रहने वाले एक चालाक युवक ने सोचा कि सारे लोग तो कुएं में दूध डालेंगे अगर मैं दूध की जगह एक बाल्टी पानी डाल दूंगा तो किसी को क्या पता चलेगा। और उसने ऐसा ही किया। अगले दिन जब सुबह हुई तो लोग वैसे ही मर रहे थे, महामारी खत्म नहीं हुई थी। राजा ने कुएं के पास जाकर इसका कारण जानना चाहा तो उसने देखा कि सारा कुँआ ही पानी से भरा हुआ है, दूध की एक बूंद भी नहीं थी। राजा सब कुछ समझ गया कि क्यों महामारी दूर नहीं हुई। दरअसल ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जो विचार उस युवक के मन में उपजा वह सभी के मन में था।

मित्रों जैसा इस कहानी में हुआ , वैसा ही हमारे जीवन में भी होता है। जब भी कोई ऐसा काम आता है जिसे बहुत सारे लोगों को मिलकर करना होता है, तब अक्सर हम अपनी जिम्मेदारियों से बच निकलते हैं। अगर हम दूसरों की परवाह किये बिना ही अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने लग जायें तो पूरे देश में भी ऐसा बदलाव ला सकते हैं।

*****

मेरा देश मेरी माँ

हिमांशु पटेल,
डी.ई.ओ.

न जाने बात क्या है तुम्हारी इस धरा पर माँ
हर कोई चाहता जन्मे, यहां पर एक बार मेरी माँ।
तेरी धरती की तलब है लाजमी, सभी चाहे तुझे मेरी माँ
तेरी धड़कन हुई शामिल, मेरी आवाज में मेरी माँ।
सभी मौसम सभी ऋतुएं, तेरे अंदाज में मेरी माँ
रहूँ कितनी दूर भी मैं, जुड़ा मिट्टी से तेरी माँ।
याद गांवों की गलियों की, जहन में जब भी आती है
उठा लेता हूँ मैं मिट्टी, खुशबू सौंधी सी आती है।
मिला जीवन जो मानव का, ये बड़भाग्य मेरा था
मिली भारत जन्मभूमि, ये सौभाग्य कम न था।
तेरे खेतों की हरारत से पिघल जाऊँ कहीं मैं ना
हो अगर जनम दोबारा, भारत देश ही देना।
भारत देश ही देना!!

*****

चुटकुले

एम.एस.सुकन्या,
पर्यवेक्षक

1. बेटे ने अपनी माँ से पूछा कि कंप्यूटर इतने स्मार्ट क्यों होते है ?
   माँ ने बड़ा सुदंर सा जवाब दिया क्योंकि वे अपनी मदरबोर्ड की सुनते है।
2. दोस्त- और सुना क्या हाल चाल है तेरे
   क्या चल रहा जिंदगी में
   दूसरा दोस्त- बस कुछ खास नहीं
   बड़ों का आशीर्वाद
   पत्नी के ताने, दर्द भरे गाने
   बाकी भगवान जाने।
3. मास्टर- पप्पू तुम रोज लेट क्यों आते हो ?
   पप्पू- जी! वो एक बोर्ड के कारण है
   मास्टर- कैसा बोर्ड ?
   पप्पू- रास्ते में एक बोर्ड है जिस पर लिखा है आगे स्कूल है कृपया धीरे चले।
4. हसबेंड ने ऑफिस में बैठे-बैठे फेसबुक पर पोस्ट किया
   "पंछी बनू उड़ता फिरुँ" मस्त गगन में
   तभी पत्नी का कमेंट आया
   "धरती छूते ही सब्जी ले आना अपने भवन में
   वरना एक भी बाल नहीं बचेंगे तुम्हारे चमन में"।
5. पप्पू को फाँसी की सजा सुनाई गई
   जज ने पूछा कोई आखिरी ख्वाहिश
   पप्पू- हमारी जगह तुम लटक जाओ।
6. Students Anthem
   हम होंगे ऑल पास
   हम होंगे ऑल पास एक दिन हो-हो
   सोते है बिंदास
   लिखते है वकवास

करते है टाईमपास
फिर भी है विश्वास
मार्क्स मिलेंगे झक्कास एक दिन

7. रेस्टोरेंट में वेटर-मैडम आप पहले क्या लेंगी
मैं पहले 10-12 सेल्फी लूंगी तुम 20 मिनट बाद आना।

8. पत्नी – मैं तंग आ गई हूँ रोज की किच-किच से, मुझे तलाक चाहिए
पति- यह लो चॉकलेट खाओ
पत्नी- तुम मुझे मना रहे हो ना
पति- नहीं रे पगली वह कहते है न कि कुछ अच्छा करने से पहले मीठा हो जाए।

9. एक बार एक फौजी की बीवी मायके जाने की जिद्द करती है
फौजी कहता है कि सुबह फौजी तरीके से बात करना
बीवी 8 बजे सुबह सावधान होकर बोलती है
जय हिंद श्रीमान मैं एक माह के लिए मायके जाने
की छुट्टी लेने आई हूँ आज्ञा दे श्रीमान।
फौजी-ठीक है पर तुमने अपना चार्ज किसको दिया है
बीवी-रहने दो नहीं जाना।

10. पत्नी-सुनो जी आजकल चोरियाँ बहुत होने लगी है
धोबी ने हमारे दो तौलिए चुरा लिए हैं।
पति- कौन से तौलिए?
पत्नी- वही जो हम शिमला के होटल से उठाकर लाए थे।

*****

सफर

राहुल शर्मा,
एम.टी.एस.

शौक था बचपन में बड़े होने का,
बड़ा हुआ तो न जाने किस शहर निकल आया।
भागते सपनों के पीछे, जाने कितने अपनों को छोड़ आया।
लगा था एक दिन फिर वही सब मिल जाएगा,
लेकिन वक्त को ये रास न आया।
खैर, मैं तो चल पड़ा लेकर यादें तमाम,
अब बढ़ते रहते कदम देख कर मुकाम।
फिर मैं इस नये शहर निकल आया,
जहां ऊंची-ऊंची इमारतों में रहने का वक्त आया।
अब ताकते रहते है नौवीं मंजिल से भागती जिंदगियों को
अपना बचपन तो कब का, मैं, एक मंजिल के घर में छोड़ आया।
शौक था बचपन में बड़े होने का
बड़ा हुआ तो न जाने ...

*****

ओलिंपिक में महिलाओं का योगदान

निशा कुमारी,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

जिस देश में कुछ वर्षो तक ओलम्पिक खेलों में पुरूषों का दबदबा हुआ करता था, आज के ओलम्पिक सितारों ने महिलाओं के मार्ग को सुगम कर दिया है । सदी के आरंभ से ही भारत से विश्व मंच पर चमकने वाले सितारों में काफी इज़ाफा हुआ है । ओलम्पिक में सबसे पहले पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला कर्णम मल्लेश्वरी थी, जिन्होंने सिडनी 2000 में कांस्य पदक जीता । भले ही मल्लेश्वरी पोडियम तक नहीं पहुँच पाई, लेकिन उन्होंने महिला एथलीटों के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया है । उन्होंने अगली पीढ़ी को प्रभावित किया चाहे वे मैरीकोम, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, पी वी सिंधु या साक्षी मलिक हो, जिन्होंने कड़ी मेहनत कर सारी मुश्किलों का सामना करते हुए आत्मविश्वास दिलाया कि वे भी देश का नाम रोशन कर सकती है ।

12 साल बाद 2012 के लंदन ओलम्पिक्स में मैरीकोम भारतीय बाक्सिंग का एक नया अध्याय लिखते हुए कांस्य पदक जीता । यहीं पर बैडमिंटन में भारत को साइना नेहवाल के रूप में नई स्टार मिली, जिन्होंने कांस्य हासिल किया । भारतीय बैडमिंटन स्टार पी वी सिंधु ने टोक्यो ओलम्पिक में काफी अच्छा प्रदर्शन किया और बड़ी उपलब्धि अपने नाम की । उन्होंने चीन की बिंग जियाओ को हराकर इतिहास रच दिया । सिंधु ने ना सिर्फ कांस्य पदक अपने नाम किया है बल्कि वो भारत के ओलम्पिक इतिहास में पहली ऐसी महिला एथलीट बन गई हैं जिन्होंने लगातार दो ओलम्पिक में मेडल जीते हो । 2016 के रियो ओलम्पिक्स में भी सिंधु ने सिल्वर मेडल अपने नाम किया था ।

शुरूआती तौर पर पुरुष प्रधान माने जाने वाले ओलम्पिक खेलों को, वैश्विक स्तर पर ओलम्पिक खेलों के मैदान में महिला एथलीट को दूर रखा जाता रहा है या निषिद्ध होता था । लेकिन आज समय बदल चुका है, आज महिला एथलीटों को शाबाश बेटी ! कहते हुए पीठ थपथपाई जा रही है । वर्ष 2000 से अब तक जीते गए कुल 15 ओलम्पिक मेडलों में से 7 मेडल महिलाओं द्वारा जीते गए हैं । यह ये दर्शाता है कि मुश्किलों के बावजूद महिलाएँ पुरूषों की बराबरी कर सकती है । टोक्यो ओलम्पिक में कुल पदकों में महिलाओं का प्रतिशत 42.85 रहा जो अब तक का रिकार्ड है ।

ओलम्पिक में महिला की भागीदारी बेहद कम है लेकिन पदक विजेता हर महिला खिलाड़ी ने अपनी प्रतिभा को बखूबी एहसास कराया है । इन महिलाओं के चलते भारत की खेल क्षमता का पूरी दुनिया को एहसास हुआ है और यह संदेश गया है कि भारत की महिला एथलीटों को कम करके नहीं आंका नहीं जा सकता । बीते कुछ सालों में महिला एथलीटों ने अपने प्रदर्शन से बेहतर संकेत दिए हैं । निशानेबाजी, तीरांदाजी, कुश्ती, बैडमिंटन, जिमनास्टिक और ट्रैक एंड फील्ड जैसे खेलों में ओलम्पिक के तैयारी के लिहाज़ से महिला एथलीट कहीं ज्यादा सशक्त दिखाई दे रही है ।

टोक्यो ओलम्पिक में पहली बार भारतीय महिला हाकी टीम ने नया इतिहास रचते हुए सेमीफाइनल में अपनी जगह बनाई । सबसे बड़ी बात यह है कि पूरे 41 साल में टीम ने पहली बार यह कारनामा कर दिखाया है। भारतीय महिला टीम के शानदार प्रदर्शन ने देशवासियों को 'चक दे' मोमेंट याद दिला दिया है। इस असंभव-सी सफलता को मुमकिन बनाया है देश की महिलाओं ने। इन्होंने ऑस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका, आयरलैंड जैसी टीमों को हराया। हालांकि यहां तक पहुंचना हर किसी के लिए आसान नहीं था। कड़े संघर्ष और तमाम बाधाओं के बाद वे यहां तक पहुंची हैं । अत: समाज को यह मानने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि महिलाएँ भी पुरूषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं रहीं ।

*****

अनोखी प्रश्नावली

सविता,
सहायक लेखाधिकारी/तदर्थ

1. वह क्या है, जो वर्ष और शनिवार में एक बार ही आता है ?

उत्तरः हिंदी का अक्षर 'व' वर्ष और शनिवार में एक बार ही आता है ।

2. सोने की उस वस्तु का नाम बताइए, जो सुनार की दुकान में नहीं मिलती ?

उत्तरः चारपाई, चारपाई सोने के लिए होती है, मगर सुनार की दुकान में नहीं मिलती ।

3. रोहन मई में पैदा हुआ, मगर उसका जन्मदिन जून में है, कैसे संभव है

उत्तरः मई एक जगह का नाम है, जन्म जून में हुआ ।

4. एक आदमी आठ दिन बिना नींद के कैसे रह सकता है ?

उत्तरः क्योंकि वह रात में सोता है ।

5. इंसान को बिना पैराशूट के प्लेन से बाहर निकाल देते हैं , परंतु वो बच जाता है कैसे ?

उत्तरः क्योंकि प्लेन उस समय़ रनवे पर ही था ।

6. नाग पंचमी का अपोजिट क्या होगा ?

उत्तरः नाग डू नॉट पंच मी ।

*****

कोविड से उत्पन्न तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य

डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

कोविड 19 से उत्पन्न भीषण परिस्थितयों के चलते मनुष्य के सभी तबके- चाहे वे उच्च वर्ग, मध्यमवर्ग या निम्नवर्ग हो, सभी किसी न किसी तरह की तनावपूर्ण परिस्थितियों को न चाहते हुए भी झेल रहे हैं। यह तनावपूर्ण माहौल जितना वायरस के संक्रमण के डर के कारण उत्पन्न हुआ उससे कहीं ज्यादा आतंक मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा फैलाया गया। दिन रात टेलीविजन पर दुनिया भर में मौतों की खबरें, अस्पताल के बाहर लोगों की चीख-पुकार,ऑक्सीजन की कमी से छटपटाते लोग, जलती लाशों इत्यादि के दृश्य देखते- सुनते अच्छे से अच्छे स्वस्थ इंसान को भी किसी अनजाने भय से ग्रसित कर देगें।

वर्ष 2019 के अंत में शुरु हुआ वायरस का यह संक्रमण अभी भी थमने का नाम नहीं ले रहा है। पहली लहर के बाद उससे भी कई गुना क्षतिकारक दूसरी लहर साबित हई। अब फिर दुनिया में तीसरी लहर आने की भी आशंका जताई जा रही है। उसमें भी यह डर चारों ओर फैला है कि तीसरी लहर में संक्रमण का केंद्र बिंदु बच्चे होंगे। ऐसे में मानसिक तौर से संतुलित व्यक्ति भी अनजाने भय से काँप उठेगा। चारों तरफ नकारात्मक खबरों को सुन-सुन कर मन में एक अजीब-सा नकारात्मक वातावरण पैदा हो जाता है जिसका असर हमारे दैनिक जीवन में भी दिखाई पड़ता है। तनाव एक हद तक तो मनुष्य की जिन्दगी में होना जरूरी है ताकि हमारा मस्तिष्क दुनिया भर की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहे किंतु उसकी अति होने पर मनुष्य डिप्रेशन, मानसिक रोगों आदि का शिकार होने लगता है। लॉकडाउन में घर में कैद होकर एवं पूरे दिन टीवी पर नकारात्मक समाचार सुन सुनकर बच्चों के बर्ताव में काफी नकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं।

नीचे ऐसे उपायों के बारे में चर्चा की गई है जिससे हमें इस भय, डर एवं तनावपूर्ण माहौल से निपटने में मदद मिल सकती है-

1. योग एवं व्यायाम - योग एवं व्यायाम के नियमित अभ्यास से न केवल शारीरिक लाभ मिलता है बल्कि मानसिक संतुलन एवं तनाव प्रबंधन में भी यह कारगर सिद्ध हुआ है। अपने मूलाधार चक्र में थोड़ी देर ध्यान केंद्रित करने से अशांत मन को शांत किया जा सकता है।

2. अध्ययन - अच्छी एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकों के अध्ययन से मन को बहुत हद तक शांति मिलती है। खासकर सोने से पहले टीवी अथवा मोबाइल देखने से मन में बेचैनी उत्पन्न होती है लेकिन किसी अच्छी पुस्तक के कुछ पन्ने पढ़ लेने से मन को तनावमुक्त किया जा सकता है।

3. संगीत सुनना - संगीत हमारे जीवन में एक अहम भूमिका निभाता है। संगीत में ऐसी शक्ति है कि वह किसी भी तनावपूर्ण माहौल को तुरंत खुशियों से भर सकता है। संगीत सुनने के कई फायदे हैं। बिना शब्दों वाला धीमी गति का मधुर संगीत सुनना मन को शांति देता है, तनाव कम होता है और बढ़ी हुई हृदय गति में सुधार आता है, श्वास प्रक्रिया सामान्य होती है। बेचैनी में तुरंत आराम मिलता है। संगीत चाहें सुनें, गाएं या बजाएं, सभी रूपों में इसका अच्छा असर देखने को मिलता है। अच्छी नींद भी आती है। डर, कुंठा व क्रोध कम होता है। मन प्रसन्न रहता है।

4. खेलों में रुचि बढ़ाएँ - खेलों से जुड़े रहने से हम बहुत हद तक अपने मानसिक तनाव को काबू में रख सकते हैं। इससे न केवल शरीर मजबूत होता है बल्कि मानसिक एकाग्रता भी बढ़ती है। यह हमारे अंदर रक्त संचार को ठीक करता है और हमारे अंदर स्फूर्ति आती है।

5. पूरी नींद लेना - शरीर के स्वस्थ रखने में नींद एक अहम भूमिका निभाती है। रात को जल्दी सोने एवं सुबह जल्दी उठने से हम कई बीमारियों से दूर रह सकते हैं। आज की दौड़-भाग भरी जिंदगी और ऊपर से सोशल मीडिया पर दिखाई जाने वाली तनावपूर्ण खबरों को देखते हुए हम सही से अपनी नींद नहीं ले पाते हैं जिसका असर हमारे स्वास्थ्य पर खासकर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। सही मात्रा में नींद पूरी होने पर हम पूरे दिन मानसिक रूप से तरोताजा महसूस करते हैं।

6.इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से फैलाई गई अतिवादी खबरों से बचे- सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ आज हमें घर बैठे-बैठे विश्व भर की सूचनाएं मिलती रहती हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का काम यह होना चाहिए कि वह लोगों को जागरूक करें किंतु टीआरपी के चलते समाचार चैनल इन दिनों किसी भी खबर को सनसनी बनाकर पेश करने से नहीं चूक रहे हैं। ऐसे में हमें सावधानी पूर्वक इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से फैलाई गई अतिवादी खबरों से बचना चाहिए।

7.डायरी लिखने की आदत डाले- डायरी लिखने की आदत बहुत हद तक तनाव को नियंत्रित कर पाने में कारगर सिद्ध होती है। कई बार ऐसा देखा गया है कि पूरे दिन में झेले गए तनाव या चिंता को एक पन्ने में उतारने से मानसिक तनाव बहुत हद तक कम हो जाता है।

8.प्रकृति के साथ समय बिताएं- चाहे हमारे पास छोटी सी बाल्कनी हो या बड़ा सा बगीचा, हमें जितना हो सके हरियाली के पास रहने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हमारे मन को सुकून एवं शांति मिलती रहे।

9. सामाजिक कार्यों से जुड़ें- परोपकार की भावना सिर्फ मन में न रखें उसे अपने जीवन में भी उतारने की कोशिश कीजिए। अपनी क्षमता एवं सामर्थ्य के अनुसार जितना हो सके दूसरों के लिए मदद का हाथ आगे बढ़ाइए। महामारी के कारण ऐसे कई लोग हैं जो आर्थिक तंगी एवं भुखमरी का सामना कर रहे हैं। दूसरों की सहायता करके हमें परम शांति की अनुभूति होती है।

10. यात्रा का आनंद उठाएं- भले ही महामारी के कारण हम अपने घरों में कैद हो गए हैं लेकिन जब भी मौका मिले हमें समय-समय पर यात्रा करते रहना चाहिए। इस भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में अपने प्रिय जनों के साथ यात्रा हो या एकल यात्रा प्रकृति और स्वयं के साथ थोड़ा वक्त गुजारना मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है।

*****

कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामान्य वाक्यांश

संकलन-हिंदी कक्ष

1.	Submitted for approval.	अनुमोदन के लिए प्रस्तुत।
2.	Submitted for orders.	आदेश के लिए प्रस्तुत।
3.	Action may be taken as proposed.	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
4.	Seen and returned.	देखकर वापस किया जाता है।
5.	Orders may be issued.	आदेशों को जारी किया जाए।
6.	Kindly accord sanction.	कृपया मंजूरी प्रदान करें।
7.	Herewith enclosed.	इसी के साथ संलग्न।
8.	Draft put up for approval.	मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
9.	Passed for payment.	अदायगी के लिए पारित किया गया।
10.	Under intimation to...	...को सूचना देते हुए।
11.	Circulate and file.	परिचालित करके फ़ाईलित करें।
12.	Please discuss.	चर्चा करें।
13.	Sanctioned.	मंजूर है।
14.	Put up immediately.	तुरंत प्रस्तुत करें।
15.	Concurrence may be obtained.	सहमति प्राप्त करें।
16.	We have no further comments.	हमें आगे और कुछ नहीं कहना है।
17.	Noted for guidance.	मार्गदर्शन हेतु नोट किया गया।
18.	Checked and found correct.	जाँच की और सही पाया।
18.	Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें।
19.	Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण माँगा जाए ।
20.	Enquiry has been ordered.	जाँच का आदेश दे दिया गया है।

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द/वाक्यांश	हिंदी शब्द/वाक्यांश
1.	Principal Accountant General	प्रधान महालेखाकार
2.	Deputy Accountant General	उप महालेखाकार
3.	Accounts and Entitlements	लेखा एवं हकदारी
4.	Pay and Accounts Officer	वेतन एवं लेखाधिकारी
5.	Gazetted Entitlements	राजपत्रित हकदारी
6.	Funds	निधि
7.	Accounts	लेखा
8.	Accountant	लेखाकार
9.	Senior Accountant	वरिष्ठ लेखाकार
10.	Administration	ररररर प्रशासन
11.	Employee	कर्मचारी
12.	Officer	अधिकारी
13.	Office Order	कार्यालय आदेश
14.	Official	पदाधिकारी
15.	Circular	परिपत्र
16.	Office Memorandum	कार्यालय ज्ञापन
17.	Training	प्रशिक्षण
18.	Termination	निष्कासन
19.	Arrear	बकाया
20.	Suspension	निलंबन
21.	Daily Allowance	दैनिक भत्ता
22.	Dearness Allowance	महंगाई भत्ता
23.	Travelling Allowance	यात्रा भत्ता
24.	Treasury Inspection	राजकोष निरीक्षण
25.	Child Care Leave	संतान देखभाल छुट्टी
26.	Child Care Centre	संतान देखभाल केंद्र
27.	Spouse	जीवनसाथी
28.	Accounting	लेखांकन
29.	Maternity Leave	मातृत्व छुट्टी
30.	Paternity Leave	पितृत्व छुट्टी

हिंदी पखवाड़ा 2021 में पुरस्कृत निबंध (हिंदी भाषी)

ग्लोबल वार्मिंग

श्री सुधांशु द्विवेदी,
डी.ई.ओ.

मनुष्य और प्रकृति एक गाड़ी के दो पहियों के समान हैं । एक को संरक्षित किए बिना दूसरे का विकास संभव नहीं है । परंतु मनुष्य ने अपने स्वार्थ सिध्दि के लिए अंधाधुंध विकास की दौड़ में प्रकृति का दोहन किया है, जिससे अनेकों विभीषिकाओं का जन्म हुआ है, ग्लोबल वार्मिंग इन्हीं में से एक है ।

बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा वाहनों से निकली हानिकारक गैसौं से प्रकृति में ग्रीन-हाऊस गैसों में वृध्दि हुई है जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय तापमान में लगातार वृध्दि हुई हैं, यही प्रभाव ग्लोबल वार्मिंग या वैश्विक तापमान कहलाता है । वैश्विक तापमान में वृध्दि की वजह से ग्लेशियर लगातार तीव्र गति से पिघल रहे हैं जिससे समुद्री जल-स्तर में वृध्दि हो रही है। इससे समुद्री किनारों पर बसे शहरों में समुद्री जल-मग्न होने का खतरा उत्पन्न हो गया है । मौसम-चक्र में परिवर्तन, जीवों का विलोपन आदि ग्लोबल वार्मिंग के कुछ अन्य नकारात्मक परिणाम हैं ।

उद्योगों और वाहनों से निकलने वाली कार्बन-डाई-आक्साइड गैस ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण है । वनोन्मूलन की वजह से पेड़ों की संख्या में कमी आई हैं जोकि कार्बन-डाई-आक्साइड गैस ग्रहण कर शुध्द ऑक्सीजन गैस का उत्सर्जन करते हैं । इसके अलावा अन्य मानवीय क्रियाएँ जैसे फसलों की कटाई के बाद पराली जलाना, कीटनाशकों का उपयोग, ऊर्जा के परंपरागत स्त्रोतों का उपयोग भोजन आदि पकाने में करने से तथा कुछ प्राकृतिक घटनाएँ जैसे ज्वालामुखी, जंगलों आदि में आग लगना आदि ग्लोबल वार्मिंग के लिए उत्तरदायी हैं ।

ग्लोबल वार्मिंग से समुद्री जलस्तर में पिछले 150 वर्षों में 8 सेंटीमीटर की वृध्दि हुई है तथा कई जलीय जीव-जन्तु विलुप्त होने के कगार पर हैं। हालांकि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकारों ने ग्लोबल वार्मिंग को भांपकर कई प्रयास किए हैं। पेरिस समझौता, क्योटो प्रोटोकॉल आदि वैश्विक स्तर पर कुछ उल्लेखनीय प्रयास है । पेरिस समझौते में विश्व के तमाम देशों ने अपने कार्बन उत्सर्जन की दर कम करके इस शताब्दी में वैश्विक तापमान में वृद्धि का लक्ष्य केवल 1.5 डिग्री सेल्सियस रखा गया है । इसके अंर्तगत सभी सरकारों ने शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है । इसका अर्थ है कि सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के तहत उतना ही कार्बन उत्सर्जन होगा जितना पर्यावरण उस सीमित समय में अवशोषित कर सके । भारत सरकार ने इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए सन 2010 में 'राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण' की स्थापना की तथा 2030 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा । इसके अलावा भारत ने अंतर्राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संगठन की स्थापना की ।

ग्लोबल वार्मिंग में लड़ने में सर्वाधिक कारगर उपाय कार्बन उत्सर्जन कम करके ऊर्जा आपूर्ति के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों का उपयोग करना है जैसे कि सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा, विद्युत ऊर्जा । सरकारों को ऊर्जा के इन स्वच्छ स्त्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए । उदाहरण के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद पर सब्सिडी, कंपनियों को इन ऊर्जा स्त्रोतों के उपयोग पर करों में छूट आदि।

यद्यपि ग्लोबल वार्मिंग एक ऐसा संकट है कि कोई भी सरकार अकेले अपने देश के नागरिकों के समर्थन के बिना प्रभावशाली कदम नहीं उठा सकती । अत: हमें भी देश के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए । साइकिल या इलेक्ट्रिक वाहनों का इस्तेमाल, भोजन पकाने के लिए एल.पी.जी का इस्तेमाल और वृक्षारोपण प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है ।

विगत कुछ वर्षो में इस दिशा में कई कदम उठाए गए हैं परन्तु इनके परिणामों को देखते हुए ये प्रयास नाकाफी प्रतीत होते हैं । ग्लोबल वार्मिंग एक ऐसा संकट है कि यह हमारे भविष्य और आने वाली पीढ़ी पर सामाजिक, शारीरिक और आर्थिक रूप से घोर संकट उत्पन्न कर सकता है । अत: विश्व की तमाम सरकारों और उनके नागरिकों के सामूहिक प्रयास से ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, तभी हम इस खतरे पर विजय प्राप्त कर सकते हैं ।

*****

<u>हिंदी पखवाड़ा 2021 में पुरस्कृत निबंध (हिंदीत्तर भाषी)</u>

मानव जीवन में खेल का महत्व

श्रीमती के. एन. जयश्री राज,
सहायक लेखाधिकारी

मनुष्य के जीवन में खेलकूद की एक विशेष भूमिका होती है । मनुष्य के रहन-सहन, पालन-पोषण तथा अंदरुनी एवं बाहरी विकास के लिए खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । बचपन से ही पढ़ाई के साथ खेल की आदत बनानी चाहिए । जैसे अंग्रेजी में एक कहावत है "A Sound mind is in a sound body". "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन होता है"। खेल चाहे कोई भी हो क्रिकेट, टेबल टेनिस, वालीबॉल, फुटबॉल, भाग-दौड़, जिम्नास्टिक किसी को भी अपनाकर अभ्यास किया जा सकता है । खेल मनुष्य में एक तरह का उत्साह बढ़ाते हैं और मनुष्य अपने दैनिक जीवन में चुस्त एवं तंदुरुस्त बन जाता है ।

छोटी उम्र से ही खेल की आदत डालने से जीवन अच्छा बन जाएगा। खेल के अभ्यास हेतु सुबह जल्दी उठने की आदत एवं कसरत करना जरूरी होता है जिससे मनुष्य का शरीर एवं मन विकसित होता है । इसके अलावा मनुष्य की पांचों इंद्रियों में भी उत्सुकता बढ़ती है ।

अकेले खेले जाने वाले खेल जैसे तैराकी, दौड़, भाला फेंकना या डिस्क फेंकना आदि खेलों में व्यक्ति का विकास और कल्याण होता है और इससे दर्शकों का भी मनोरंजन होता है लेकिन जो खेल टीम में खेला जाता है उसमें अनेक खिलाड़ी साथ में खेलते हैं । टीम खेल से सभी खिलाड़ियों में एक दूसरे से सहमत होकर जीना, मैत्री या मित्रता भाव एवं भाईचारे की भावना उत्पन्न होती है जो कि आधुनिक यांत्रिकी जीवन के लिए जरूरी है ।

सरकार ने खेलों का महत्व जानते हुए देश के हर कोने में स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स एवं खेल प्रशिक्षण संस्थानों की व्यवस्था की है तथा होनहार खिलाड़ियों को पहचान देकर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है । केंद्र एवं राज्य सरकारों ने प्रतिभावान खिलाड़ियों के लिए सरकारी नौकरी में भी अलग से जगह दी है ।

सरकार द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विजेता खिलाड़ियों के प्रोत्साहन हेतु आकर्षक पुरस्कार दिये जाते हैं । आज के भारत ने पूरे संसार के बीच खेलों में अपनी अलग पहचान बना ली है । हाल ही में संपन्न हुए ओलिंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने भारत का मान बढ़ाया है।

खेलकूद से मनुष्य का न केवल शारीरिक विकास होता है बल्कि इससे मानसिक विकास भी होता है । खेलों के अभ्यास से जीवन में अनुशासन बढ़ता है तथा रहन-सहन में बदलाव आता है जो कि दैनिक जीवन के लिए अच्छा होता है । आजकल कई लोगों के लिए खेलकूद रोजी रोटी का भी साधन बन गया है ।

खेलकूद द्वारा मनुष्य न केवल अपना शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या आर्थिक विकास कर सकता है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने देश का भी नाम रोशन कर सकता है । खेल को प्रत्येक मनुष्य के प्रारंभिक स्तर पर ही अनिवार्य बना देना चाहिए ताकि न केवल स्वयं, परिवार या गांव का बल्कि संपूर्ण देश का फायदा हो सके ।

*****

आपके पत्र

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका कावेरी का 25वें अंक की डिजिटल प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । "**कावेरी**" का यह अंक आवरण की साज-सज्जा, विषय सामग्री की विविधता और स्तरीय रचनाओं के कारण विशिष्ट बन पड़ा है । कावेरी के इस अंक में शामिल रचनाओं में सहजता और बोधगम्यता है । वैश्विक महामारी कोरोना की आपदा में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कावेरी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन अत्यंत सराहनीय कार्य है ।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में सशक्त भूमिका का निर्वहन कर रही है । इसका भविष्य और उज्ज्वल हो यही कामना है ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

*****

महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "**कावेरी**" के 25वें अंक वर्ष 2020-21 की ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार । भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रूचिकर एवं प्रेरणादायक हैं । इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं । पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं मनमोहक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "**कावेरी**" के 25वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय एवं आकर्षक है । पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुद्रण उच्चकोटि का है । संपादक मंडल द्वारा रचनाओं का चयन एवं सामग्री का समावेश कुशलता से किया गया है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएँ । आशा है कि आपकी पत्रिका कावेरी इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे ।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-)
राजस्थान, जयपुर

*****

महोदय,

ई-मेल द्वारा आपकी कार्यालयी पत्रिका "**कावेरी**" का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। आपकी ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं उच्चस्तरीय है । पत्रिका का मुख्य पृष्ठ व मुद्रण विशेष रूप से सराहनीय है । इसके साथ ही छायाचित्रों एवं प्रेरणादायी विचारों व उक्तियों का संकलन अति-उत्तम है । हिंदी भाषा विश्व भर में तेजी से प्रसारित हो रही है जिसका श्रेय हिंदी लेखकों के साथ-साथ हिंदी भाषी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशकों एवं कार्यालयों को भी जाता है । आपकी पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उत्तम हैं इसके अतिरिक्त आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा के संबंध में किए जा रहे कार्य एवं प्रयास विशेष रुप से सराहनीय है। पत्रिका के सम्मानित संपादक मंडल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका कावेरी के उज्ज्वल भविष्य के लिए सुगंधा परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** **4.** क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति **100%**	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.**ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **90%**	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.** ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **55%**
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	**100%**	**100%**	**100%**
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**

13.	**(i)** मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**40%**	**30%**	**20%**
			(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।	

हिंदी पखवाड़ा 2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

प्रतियोगिताएं	प्रथम पुरस्कार (श्री/श्रीमती /कु.)	द्वितीय पुरस्कार (श्री/श्रीमती/कु.)	तृतीय पुरस्कार (श्री/श्रीमती/कु.)	सांत्वना पुरस्कार (श्री/श्रीमती/कु.)
निबंध लेखन	हिंदी भाषीः सुधांशु द्विवेदी हिंदीत्तर भाषीः के.एन.जयश्री राज	हिंदी भाषीः सविता हिंदीत्तर भाषीः जया एम.एम.	हिंदी भाषीः राहुल शर्मा	-
एकल गायन	के.एन.जयश्री राज	विजय सुनंदा	मणीश कुमार	ज्योति विजय यादव चंद्रमणी आजाद
प्रश्नोत्तरी	हिमांशु पटेल	राहुल शर्मा	राहुल कुमार विजय यादव	पूजा गुप्ता
समाचार पत्र वाचन	हिंदी भाषीः हिमांशु पटेल हिंदीत्तर भाषीः सुपिथ	हिंदी भाषीः चंद्रमणी आजाद हिंदीत्तर भाषीः जया एम.एम.	हिंदी भाषीः राहुल कुमार हिंदीत्तर भाषीः सविता एम.के.	-

हिंदी दिवस समारोह 2021 की कुछ झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा 2021 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेते प्रतिभागी एवं निर्णायक मंडली

हिंदी कार्यशाला में भाग लेते कार्यालय के पदाधिकारी